वर्धमान सामायिक साधना श्रेणी

संपादक : प.पू.आ.श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.

231

वर्धमान सामायिक साधना श्रेणी

प्रेरणा दाता

'सूरि रामचन्द्र' के सुशिष्य पू. अध्यात्मयोगी
पू.पं.श्री **भद्रंकरविजयजी म.सा.** के शिष्यरत्न
मरुधररत्न, पूज्य आचार्य श्रीमद् विजय
रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.

231

प्रकाशक

C/o. सुरेन्द्र जैन, Office No. 304, 3rd Floor,
बे.व्यु.बिल्डींग, विंग-ईस्ट बे, डॉ. एम.बी. वेलकर स्ट्रीट,
कालबादेवी, मुंबई-400 002.
Cell 8484848451 (only whatsapp)

साधक का नाम: _____

साधना प्रारंभ करने की तारीख _____

वर्धमान सामायिक साधना श्रेणी के नियम

1) एक दिन में कम से कम एक सामायिक अवश्य करें ।
2) एक दिन में एक से अधिक सामायिक भी कर सकते है ।
3) जितनी सामायिक हुई हो उतने अंक पर राइट (✓) करे ।
4) श्रेणी में जहाँ 2 अंक है, वहाँ एक साथ बिना पारे दो सामायिक करे ।
5) एक साथ में ज्यादा से ज्यादा बिना पारे 3 सामायिक हो सकती है । उसके बाद सामायिक पारकर पुनः सामायिक लेवे ।
6) सामायिक दरम्यान नई गाथाएँ, पुरनावर्थन, पुस्तक वांचन, प्रवचन श्रवण, नवकारवाली, काउसग्ग आदि क्रियाएँ कर सकते है । परंतु सांसारिक बाते करके पाप न बांधे ।
7) इस वर्धमान सामायिक साधना श्रेणी के आपकी 5250 सामायिक होगी ।

सामायिक महिमा

नवकार महामंत्र की भाँति सामायिक सूत्र `करेमि भंते' सूत्र भी शाश्वत सूत्र है । भूत-भविष्य और वर्तमान में हुए, होनेवाले और विद्यमान तीर्थंकर भी इसी सूत्र के माध्यम से चारित्र धर्म की प्रतिज्ञा का स्वीकार करते हैं । इस सूत्र की महिमा अपरंपार है ।

इस सूत्र के माध्यम से जब तीर्थंकर परमात्मा चारित्र धर्म को स्वीकार करते हैं, त्योंहि उन्हें चौथा मनःपर्यवज्ञान हो जाता है ।

कर्म की लघुता हुए बिना जीवात्मा को इस सूत्र की प्राप्ति नहीं होती है । जिस आत्मा पर लगे हुए मोहनीय आदि कर्मों की उत्कृष्ट स्थिति एक कोड़ा कोड़ी सागरोपम से अधिक होती है, वह आत्मा द्रव्य से भी नवकार का `न' और `करेमि भंते' का `क' प्राप्त नहीं कर पाती है ।

जो आत्मा द्रव्य से भी नवकार गिनती है या `करेमि भंते' द्वारा सामायिक की प्रतिज्ञा स्वीकार करती है, उस आत्मा पर लगे हुए कर्मों की स्थिति एक कोड़ाकोड़ी

सागरोपम से अधिक नहीं है । उससे अधिक कर्मों की स्थिति वाली आत्मा को नवकार या करेमि भंते प्राप्त ही नहीं होता है ।

इस सूत्र के मध्यम से साधु, जीवन पर्यंत के लिए और श्रावक न्यूनतम 48 मिनिट के लिए सावद्ययोगों के त्याग का पच्चक्खाण करता है । इस प्रतिज्ञा द्वारा वह कर्म के आस्त्रव द्वारों को सर्वथा बंद कर देता है ।

केवलज्ञान की प्राप्ति के बाद तीर्थङ्कर परमात्मा तीर्थ की स्थापना करते हैं और सर्वप्रथम गणधर भगवन्तों को त्रिपदी (उपन्नेइ वा, विगमेइ वा, धुवेइ वा) प्रदान करते हैं। बीजबुद्धि के निधान गणधर भगवंत इस त्रिपदी के श्रवण के बाद द्वादशांगी की रचना करते हैं, जिसमें सम्पूर्ण जैनशासन गुँथा होता है ।

इस द्वादशांगी का सार सामायिक है । द्वादशांगी में जो अंतिम अंग दृष्टिवाद है और जिसका विस्तार चौदह पूर्व है, उस चौदह पूर्व का सार 'नमस्कार महामन्त्र' है ।

इस प्रकार समस्त जैनागम का सार होने के कारण

यह सामायिक सूत्र अत्यन्त ही व्यापक है । यहाँ तक कि नमस्कार महामन्त्र में भी यह सूत्र व्याप्त है ।

पंच-परमेष्ठी में अरिहंत व सिद्ध सामायिक की पराकाष्ठा को प्राप्त है, जबकि शेष तीन परमेष्ठी सामायिक के साधक हैं ।

साधु व श्रावक के लिए अवश्य करने योग्य छह आवश्यक हैं–

1) सामायिक 2) चतुर्विंशति स्तव 3) गुरु-वंदन 4) प्रतिक्रमण 5) कायोत्सर्ग और 6) पच्चक्खाण ।

इन छह आवश्यकों में मुख्य सामायिक आवश्यक है और शेष सभी इसी के विस्तार हैं अथवा दूसरे शब्दों में शेष सभी आवश्यकों की साधना भी सामायिक के लिए ही है ।

इस `सामायिक-सूत्र' में भी छह आवश्यकों की साधना रही हुई है, जो इस प्रकार है-

1) **'सामाइयं'** पद से **'सामायिक आवश्यक'** की साधना

2) प्रथम **'भंते'** पद से **चतुर्विंशति** आवश्यक की साधना

3) द्वितीय **'भंते'** पद से **गुरु-वंदन** आवश्यक की साधना

4) **'पडिक्कमामि'** पद से **प्रतिक्रमण** आवश्यक की साधना

5) **'अप्पाणं वोसिरामि'** पद से **कायोत्सर्ग** आवश्यक की साधना

6) **'पच्चक्खामि'** पद से **पच्चक्खाण** आवश्यक की साधना

सामायिक का सामान्य अर्थ समता भाव की साधना है। आज तक जितनी आत्माएँ मोक्ष में गई हैं-वे सामायिक की साधना से ही गई हैं। चरम शरीरी तीर्थङ्कर परमात्मा उसी भव में अपना मोक्ष जानते हुए भी जीवन में सामायिक का स्वीकार करते हैं। सामायिक के साथ ही उन्हें चतुर्थ मनः पर्यवज्ञान प्राप्त हो जाता है।

सर्वविरति सामायिक की प्राप्ति उत्कृष्ट से आठ भव तक हो सकती है। जघन्य से उसी भव में आत्मा मोक्षगामी बन सकती है।

❖ जिस प्रक्रिया से समता की अभिवृद्धि होती है, उसे सामायिक कहते हैं। समता अर्थात् न राग के पक्ष में रहना और न ही द्वेष के पक्ष में। Live in Balance तराजू के दोनों पलड़े जब खाली होते हैं, तब उसकी सुई

एकदम केन्द्र में होती है परन्तु ज्योंही किसी पलड़ें में कोई वस्तु रखी जाती है, वह सुई चलित हो जाती है । एक पलड़ा नीचे हो जाता है, दूसरा पलड़ा ऊँचा हो जाता है और तराजू का Balance टूट जाता है । समता में रहना आत्मा का मौलिक स्वभाव है । **'भगवती सूत्र'** में कहा गया है-**'आया सामाइए'** आत्मा ही सामायिक है ।

'समता' स्वभावी होने पर भी रागद्वेष के चंगुल में फँसकर आत्मा विभावदशा में डूब जाती है । तराजू के दोनों पलड़े राग द्वेष के प्रतीक हैं, जब वे दोनों पलड़े खाली होते हैं, तब अध्यवसाय रुपी सुई एकदम Balance में होती है, परन्तु ज्योंही आत्मा में राग या द्वेष के संस्कार जागृत होते हैं, त्योंही आत्म-अध्यवसाय रुपी सुई Balance से च्युत हो जाती है और आत्मा अस्थिर बन जाती है । आत्मा की समता भंग हो जाती है ।

तालाब का पानी स्थिर और शान्त हो तब हमें उसमें अपना प्रतिबिम्ब दिखाई पड़ता है परन्तु ज्योंही उस पानी में कोई कंकड़ डालता है, वह पानी हिलने लगता है, उसकी स्थिरता नष्ट हो जाती है और तत्क्षण उस पानी में प्रतिबिम्ब को ग्रहण करने की योग्यता नष्ट हो जाती है ।

जब आत्मा अपने स्वभाव में स्थिर और शान्त होती है, तभी आत्मा में आत्मा के दर्शन सम्भव हो पाते हैं परन्तु ज्योंही राग अथवा द्वेष का कंकड़ उसमें गिरता है आत्मा के अध्यवसाय आन्दोलित हो उठते हैं और आत्मा समता से च्युत हो जाती है ।

समता का महत्व : लोकोत्तर जिनशासन में समता का अपूर्व माहात्म्य बतलाया गया है । जिनशासन में सभी प्रकार के अनुष्ठान समत्व की प्राप्ति के उद्देश्य को लेकर ही हैं ।

साधु-जीवन के स्वीकार के साथ साधक आजीवन सामायिक की प्रतिज्ञा का स्वीकार करता है ।

अनुकूलता	और	प्रतिकूलता
सुख	और	दुःख
शत्रु	और	मित्र
स्वर्ण	और	तृण
सम्मान	और	अपमान
हर्ष	और	शोक आदि

सभी द्वन्द्वों में मध्यस्थ / तटस्थ रहना, इसी का नाम सामायिक है ।

सामायिक मोक्ष की साधना का प्रधान अंग है । अर्थात् सभी प्रकार की मोक्ष-साधक क्रियाओं में सामायिक व्याप्त है । किसी भी अनुष्ठान में से यदि सामायिक तत्त्व को दूर कर दिया जाय तो वह अनुष्ठान मोक्ष-साधक नहीं बन सकता है । इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि सामायिक साध्य है और अन्य सभी अनुष्ठान सामायिक के साधन हैं ।

साधु-जीवन का स्वीकार करने में असमर्थ श्रावकों के लिए भी सामायिक का विधान किया गया है । श्रावक-धर्म के अन्तर्गत नौवाँ व्रत सामायिकव्रत है । इसे शिक्षाव्रत भी कहते हैं, क्योंकि इस व्रत द्वारा श्रमण-जीवन का अभ्यास किया जाता है और पुनः पुनः सामायिक में रहने की प्रेरणा की जाती है ।

श्रावक के लिए **'सामायिक'** अवश्यकरणीय कर्तव्य है । एक बार सामायिक कर लेने से भी संतोष मान लेने का नहीं है बल्कि यह सामायिक पुनः पुनः की जानी चाहिये । कहा भी है-**'बहुसो सामाइयं कुज्जा'** बहुत बार सामायिक करनी चाहिये ।

सामायिक का जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त 48 मिनिट है, अर्थात् कम-से-कम प्रतिदिन एक सामायिक करके अवश्य ही समत्वयोग की साधना करनी चाहिये। सामायिक का पुनः पुनः अभ्यास पूर्ण-सामायिक (साधु-जीवन) की प्राप्ति के लिए ही है।

`सामायिक' में रहा श्रावक श्रमणतुल्य बनता है। कहा भी है-

सामाइअंमि उ कए, समणो इव सावओ हवइ जम्हा।

एएण कारणेणं, बहुसो सामाइयं कुज्जा ॥

अर्थ : सामायिक करते समय श्रावक श्रमणतुल्य बनता है, अतः बारबार सामायिक करनी चाहिये।

यह संसार राग-द्वेष, शत्रु-मित्र, सुख-दुःख, अनुकूलता-प्रतिकूलता आदि अनेक द्वन्द्वों से भरा हुआ है। इन द्वन्द्वों से आत्मा को मुक्त करने के लिए `सामायिक' की साधना है।

सामायिक के द्वारा आत्म-गुणों की पुष्टि होती है और आत्मा में घर कर गए दोषों का ह्रास होता है। अनादिकाल से अहंत्व और ममत्व के कुसंस्कार आत्मा में घर कर गए

हैं । उन कुसंस्कारों से आत्मा को विशुद्ध बनाने के लिए सामायिक की साधना अनिवार्य हैं ।

निमित्त को पाते ही संस्कार जागृत हो जाते हैं । स्थनेमि, अषाढ़ाभूति, नंदिषेण, सिंहगुफावासीमुनि, संभूतिमुनि आदि के पतन में कुनिमित्त की ही प्रबलता थी । अतः आत्म-जागृति के लिए सामायिक की साधना अनिवार्य है ।

• **सामायिक में दानादि धर्मों की आराधना :** जगत् उद्धारक तीर्थंकर परमात्मा ने चार प्रकार के धर्म बतलाए हैं । सामायिक में रहा साधक चारों प्रकार के धर्म की आराधना करता है ।

• सामायिक में नमस्कार महामन्त्र आदि का जाप किया जाता है, अथवा जिनोपदिष्ट सूत्रों का स्वाध्याय किया जाता है । जाप और स्वाध्याय की दोनों प्रक्रियाओं द्वारा अरिहन्तादि को सम्मान का दान किया जाता है । नमस्कार महामन्त्र के स्मरण में तो सम्मान-दान स्पष्ट ही है ।

• जिन सूत्रों का सामायिक में स्वाध्याय किया जाता

है, उन सूत्रों के रचयिता गणधर और पूर्वाचार्य महर्षि और उन सूत्रों के अर्थ के प्रणेता अरिहन्त परमात्मा होते हैं । स्वाध्याय से अरिहन्त परमात्मा की आज्ञा का पालन होता है । आज्ञा-पालन का अर्थ सम्मान का दान है । इस प्रकार सामायिक में **दान धर्म** रहा हुआ है ।

• सामायिक में साधक अपनी पाँच इन्द्रियों को वश में रखता है । किसी भी प्रकार की अयोग्य प्रवृत्ति का आचरण नहीं होने से इसमें शील-धर्म की आराधना होती हैं ।

• सामायिक में बाह्य और अभ्यन्तर उभय तप-धर्म की आराधना समाविष्ट है । सामायिक करते समय साधक चारों प्रकार के आहार का त्याग करता है अतः अनशन, उणोदरी, वृत्ति-संक्षेप और रसत्याग की आराधना हो जाती है । सामायिक में स्थिर-आसन होने से **'काय-क्लेश'** और **संलीनता** तप भी आ जाते हैं ।

सामायिक में क्या नहीं चलता है ?

1. गले में सोने या चांदी की चैन पहिनकर सामायिक नहीं कर सकते हैं ।

2. अंगुली में सोने, चांदी या तांबे की वींटी (अंगूठी) पहिनकर सामायिक नहीं कर सकते हैं ।
3. हाथ में घड़ी पहिनकर सामायिक नहीं कर सकते हैं ।
4. सामायिक में रुपयों का स्पर्श नहीं कर सकते हैं ।
5. सामायिक में गुरु-पूजन, ज्ञानपूजन आदि द्रव्य पूजा नहीं कर सकते हैं ।
6. सामायिक में कच्चे पानी का स्पर्श नहीं कर सकते हैं ।
7. सामायिक में इलेक्ट्रिक घड़ी का स्पर्श नहीं कर सकते हैं ।
8. चालू पंखे के नीचे सामायिक नहीं कर सकते हैं ।
9. काल समय में कामली सिर पर ओढ़े बिना खुली जगह में नहीं जा सकते हैं । कई लोग बाहर जाते समय कटासने को ही सिर पर लगा देते हैं, परंतु वैसा न करें, ऊन की कामली बराबर ओढ़नी चाहिए ।
10. सामायिक में कच्चे फल आदि का स्पर्श नहीं करना चाहिए ।

11. सामायिक में पूंजे बिना जमीन पर नहीं बैठना चाहिए ।
12. सामायिक के वस्त्र शुद्ध होने चाहिए । मल-मूत्र किए वस्त्र नहीं चलते हैं ।
13. सामायिक में अखबार, नोवल आदि नहीं पढ़ने चाहिए ।

सामायिक के उपकरण

1. **धोतीः** सूती, सफेद तथा अखंड धोती होनी चाहिए । फटा हुआ, संधा हुआ, जला हुआ वस्त्र नहीं पहिनना चाहिए ।
2. **कटासना :** कटासना ऊन का तथा सफेद होना चाहिए । समायिक आदि की साधना से तैजस शरीर ज्यादा सक्रिय बनता है । अतः अपनी ऊर्जा को धरती में बहती बिजली खींच न ले, इसके लिए ऊनी वस्त्र अवरोधक होने से ऊन के कटासने पर बैठना चाहिए ।

◆ ऊनी वस्त्र से त्रसकाय आदि सूक्ष्म जीवों की रक्षा होती है ।

3. **मुहपत्ति :** मुँह की पट्टी - पत्ति अर्थात् पट्टी । मुहपत्ति एक बेंत और चार अंगुल प्रमाण होनी चाहिए ।

   मुहपत्ति की तीन किनारी खुली व एक किनारी बँधी होनी चाहिए ।

- मुहपत्ति सफेद होनी चाहिए, सफेद रंग क्षमा का प्रतीक है ।
- बोलते समय अपने मुँह से जो गर्म हवा निकलती है उससे वायुकाय के जीवों की हिंसा होती है । इस हिंसा के पाप से बचने के लिए मुहपत्ति का उपयोग किया जाता है । तथा मुँह से थूंक के छींटे पुस्तक आदि पर गिरने से ज्ञानावरणीय कर्म का बंध होता है, उससे बचने के लिए मुँह के पास मुहपत्ति रखनी चाहिए ।
- मुहपत्ति के उपयोग से भाषा समिति व वचन गुप्ति का पालन होता है।
- मुहपत्ति को मुंह पर बाँधना नहीं चाहिए ।
- मुहपत्ति पडिलेहन में पुरुषों को 50 तथा स्त्रियों को 40 बोल बोलने चाहिए ।

4. **चरवला :** चर अर्थात् चलते हुए मन को शुभ प्रवृत्ति से रोकने का साधन **'चरवला'** है ।

इस संसार में 24 दंडकों में परिभ्रमण करती हुई आत्मा दंडित होती है, अतः 24 अंगुल की डंडी होनी चाहिए तथा आठ कर्मों से मुक्त होने के लिए आठ अंगुल की ऊन की दस्सी होनी चाहिए ।

चरवले का माप

1. पुरुषों को गोल दंडीवाले तथा स्त्रियों को चौरस दंडीवाले चरवले का उपयोग करना चाहिए ।
2. चरवले की दंडी लकड़ी की होनी चाहिए । स्टील, अल्युमिनियम, चांदी या प्लास्टिक की डंडी नहीं चलती है ।
3. चरवले की दस्सी ऊन की होनी चाहिए ।
4. चरवले का कुल माप 32 अंगुल (24 अंगुल डंडी + 8 अंगुल की दस्सी) होना चाहिए ।
5. मुहपत्ति 16-16 अंगलु (1 वेंत + 4 अंगुल) समचौरस होनी चाहिए । मुहपत्ति तीन ओर से खुली और एक ओर से किनारीवाली होनी चाहिए ।

- सामायिक की क्रिया में बार-बार प्रमार्जन करने का होता है अतः उसके लिये चरवला अनिवार्य है । बिना चरवले के सामायिक नहीं कर सकते हैं ।

आत्म साधना में उपयोगी विविध मुद्राएँ

1. **गुरु स्थापना मुद्रा :** परमात्मा के विरह में जिनप्रतिमा की स्थापना की तरह गुरु के वियोग में गुरु की स्थापना की जाती है । लघु प्रतिक्रमण, प्रतिक्रमण, सामायिक, स्वाध्याय प्रतिलेखना, देववंदन आदि विविध क्रियाएँ गुरु-साक्षी में करने की होती हैं । अतः प्रतिष्ठित स्थापनाचार्य न हो तो ज्ञान आदि की पुस्तक ऊँचे स्थान पर रखकर सीधा हाथ रखकर नवकार और पंचिदिय सूत्र बोलकर गुरु की स्थापना करने की होती है ।
2. **उत्थापन मुद्रा :** प्रतिक्रमण आदि धार्मिक क्रिया की पूर्णाहुति के बाद उल्टा हाथ रखकर एक नवकार गिनकर गुरु स्थापना की उत्थापना विधि की जाती है ।
3. **कायोत्सर्ग मुद्रा :** प्रतिक्रमण, देववंदन, सामायिक आदि में कायोत्सर्ग किया जाता है । कायोत्सर्ग

खड़ेखड़े जिनमुद्रा में करना चाहिए । खड़े रहते समय आगे के भाग में 4 व पीछे के भाग में तीन अंगुल का अंतर रखना चाहिए ।

4. **योग मुद्रा :** एक हाथ की चारों अंगुलियाँ दूसरे हाथ की चारों अंगुलियों में इस प्रकार डालें कि दाहिने हाथ की तर्जनी अंगुली सबसे ऊपर रहे । दोनों अंगूठे पास में रखें । दोनों हाथों की कोहनियों को पेट पर लगावें ।

सामायिक के चार प्रकार

1) श्रुत सामायिक - गीतार्थ गुरु के पास शास्त्रों का अध्ययन करना ।

2) सम्यक्त्व सामायिक - जिनेश्वर के वचनों पर पूर्ण श्रद्धा रखना । सुदेव, सुगुरु और सुधर्म के स्वरूप को पहिचान कर उनको स्वीकार करना ।

3) देशविरति सामायिक - सावद्य पाप व्यापारों का आंशिक त्याग करना, अणुव्रतों को ग्रहण करना ।

4) सर्वविरति सामायिक - सर्व सावद्य व्यापारों का सर्वथा त्याग करना ।

सामायिक का फल :- सामायिक की साधना का अमाप फल है । भावपूर्वक की गई सामायिक में तो कैवल्य लक्ष्मी प्रदान करने की ताकत रही हुई है ।

सामान्य से भी सामायिक का जो फल है, उसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते हैं ।

शास्त्र में कहा है-`एक व्यक्ति प्रतिदिन एक लाख स्वर्ण मुद्राओं का दान करता है और दूसरा व्यक्ति दो घड़ी की सामायिक करता है...तो दान देने वाला व्यक्ति, सामायिक करने वाले की तुलना नहीं कर सकता है ।'

सामायिक का सामान्य फल (आनुषंगिक फल) बताते हुए पूज्य वीरविजयजी महाराज ने कहा है-

लाख ओगण साठ बाणुं कोडी, पचवीस सहस नवसे जोडी ।

पचवीस पल्योपम झाझेरु, ते बांधे आयु सुरकेरुं ।।

अर्थात् एक दो घड़ी की सामायिक द्वारा आराधक 92, 59, 25, 925, पल्योपम देवायु का बन्ध करता है ।

सामायिक की साधना से साधक पंच आस्त्रव द्वार का रोध करता है, अर्थात् संवर-धर्म का सेवन करता है ।

इसके साथ ही पूर्व भव में संचित कर्मों का सामायिक के द्वारा नाश होता है । इस प्रकार सामायिक में संवर और निर्जरा रुप दोनों प्रकार के धर्मों की आराधना होती है ।

सामायिक साधना-स्थल

बाह्य निमित्तों से अपना मन अत्यधिक प्रभावित होता है । बाह्य शुभ निमित्तों से अपने मन में शुभ भाव पैदा होते हैं और बाह्य अशुभ निमित्तों से अपने मन में अशुभ भाव पैदा होते हैं ।

सामायिक की साधना में अपने मन को स्थिर करने के लिए पौषधशाला में जाकर सामायिक करनी चाहिए ।

साधना में मन को केन्द्रित करने के लिए घर का वातावरण अनुकूल नहीं होता है क्योंकि घर में सतत सांसारिक प्रवृत्तियाँ चलती रहती हैं । उन प्रवृत्तियों में मन भटके बिना नहीं रहता है । अतः जहाँ तक हो सके, सामायिक घर में नहीं करनी चाहिए, बल्कि पौषधशाला में जाकर सामायिक करनी चाहिए ।

सामायिक जैसे आत्महितकर धार्मिक अनुष्ठान सद्गुरू के सानिध्य में ही करने का विधान है । सद्गुरु

के चरणों में जाकर सामायिक करने से पौषधशाला के पवित्र वातावरण का भी लाभ मिलता है ।

1) स्थिर आसन : सामायिक दरम्यान आराधना में मन को केन्द्रित करने के लिए स्थिर आसन का होना बहुत जरूरी है । जिसका आसन ही अस्थिर होगा, उसका मन कैसे स्थिर रह सकेगा ?

सामायिक दरम्यान बैठने के लिए ऊन के आसन का प्रयोग करना चाहिए ।

मन की एकाग्रता के लिए पर्यंकासन, वीरासन, वज्रासन, भद्रासन, उत्कटिकासन, गोदोहिका-आसन तथा कायोत्सर्ग आदि विविध आसन बताए गए हैं ।

सामायिक दरम्यान इनमें से किसी भी योग्य आसन में बैठकर जाप आदि आराधना की जा सकती है ।

2) स्वाध्याय-पठन-पाठन : सामायिक लेते समय साधक `सज्झाय' के दो आदेश मांगकर सामायिक दरम्यान स्वाध्याय में रहने का संकल्प करता है । अतः साधक को सामायिक दरम्यान वाचना, पृच्छना आदि पाँच प्रकार का स्वाध्याय करना चाहिए ।

卐 समायिक में नई गाथाएँ कंठस्थ की जा सकती हैं ।

卐 सामायिक दरम्यान याद किए गए सूत्रों का पुनरावर्तन भी किया जा सकता है ।

卐 सामायिक दरम्यान सूत्रों के अर्थ पढ़ सकते हैं- उन्हें याद कर सकते हैं ।

卐 सामायिक दरम्यान गुरु भगवंत के उपदेश का श्रवण किया जा सकता है ।

सामायिक दरम्यान गुरु भगवंत या विशेषज्ञानी श्रावक, पंडितजी के पास अपनी शंकाओं का समाधान कर सकते हैं ।

卐 सामायिक दरम्यान धार्मिक-साहित्य, उपदेश-प्रेरक कथा-साहित्य आदि का वाचन कर सकते हैं ।

卐 सामायिक दरम्यान सामाजिक या राजकीय समाचार पत्र, फिल्मी पत्र-पत्रिकाएँ आदि नहीं पढ़नी चाहिए ।

卐 सामायिक दरम्यान व्यापार, मैच, इलेक्शन आदि समाचार पत्र नहीं पढ़ने चाहिए ।

3) सामायिक में जापः सामायिक दरम्यान अपने मन को केन्द्रित करने के लिए श्री नमस्कार महामंत्र या

अन्य किसी तीर्थंकर परमात्मा या गुण संबंधी पद, मंत्र का जाप किया जा सकता है ।

जाप में एक ही पद का पुनः पुनः उच्चारण किया जाता है ।

जाप करते समय अपना मुँह पूर्व या उत्तर दिशा सम्मुख होना चाहिए ।

जाप के लिए सूत की श्वेत माला या पंचवर्णी सूत की माला या स्फटिक की माला का प्रयोग कर सकते हैं, परंतु प्लास्टिक की माला से जाप नहीं करना चाहिए ।

जाप करते समय पद्मासन, अर्द्ध पद्मासन या सुखासन में बैठ सकते हैं ।

जाप करते समय अपनी रीढ़ की हड्डी सीधी रहनी चाहिए, जिससे अप्रमत्त रहकर जाप हो सकेगा । जाप करते समय अत्यंत झुककर नहीं बैठना चाहिए । झुक्कर बैठने से निद्रा सवार हो जाती है ।

जाप दरम्यान अपने दाहिने हाथ में माला पकड़नी चाहिए ।

अपनी चार अंगुली के ऊपर अर्थात् तर्जनी और अंगूठे के बीच माला रहनी चाहिए और मुट्ठी आधी बंद रखनी चाहिए ।

माला भी धार्मिक उपकरण होने से उसे पैर नहीं लगना चाहिए ।

माला अपनी छाती से चार अंगुल दूर और नाभि से ऊपर रखनी चाहिए ।

जाप करते समय आँखें बंद भी रख सकते हैं अथवा अपनी दृष्टि को नासिका के अग्र पर स्थिर कर सकते हैं ।

4) सामायिक में ध्यान : ध्यान के मुख्य दो प्रकार हैं-शुभ और अशुभ ध्यान ।

आर्त व रौद्र अशुभ ध्यान हैं ।

धर्म और शुक्ल शुभ ध्यान हैं । सामायिक दरम्यान अपने मन को शुभ ध्यान में स्थिर रखने का प्रयास करना चाहिए ।

जाप में एक ही मंत्र का पुनः पुनः उच्चारण करना होता है, जब कि ध्यान में किसी एक ही पदार्थ या घटना

पर अपने मन को केनद्रित करना होता है । ध्यान उत्कृष्ट कोटि का तप है । ध्यान अभ्यंतर तप कहलाता है । ध्यान से अपूर्व कर्मनिर्जरा होती है । तारक तीर्थंकर परमात्मा दीक्षा लेने के बाद केवलज्ञान न होने तक लगभग ध्यानावस्था में ही रहते हैं और ध्यान के द्वारा ही अपूर्व कर्मनिर्जरा कर केवलज्ञान प्राप्त करते हैं ।

ध्यान अर्थात् चित्त की एकाग्रता ।

सामायिक दरम्यान साधक ध्यान भी कर सकता है । ध्यान में परमात्मा के पाँच कल्याणक, समवसरण, चंडकोशिक सर्प पर परमात्मा की कृपा, आदि दृश्यों को मानसिक कल्पना द्वारा नजर समक्ष खड़ा किया जा सकता है ।

5) सामायिक में कायोत्सर्ग : सामायिक दरम्यान देह की ममता के निवारण के लिए कायोत्सर्ग की साधना की जा सकती है ।

कायोत्सर्ग में काया का त्याग नहीं है किंतु काया की ममता का त्याग है ।

अनादि काल से आत्मा को अपने देह के प्रति गाढ़ राग हुआ है ।

धन आदि की आसक्ति को छोड़ना तो भी सरल है, परंतु काया की ममता को तोड़ना अत्यंत कठिन है ।

सत्त्वशाली महान् आत्माएँ तो मरणांत कष्ट या उपसर्गों में लेश भी विचलित हुए बिना सम भाव में रह सकी थीं...अपने पास उतना सामर्थ्य नहीं है...फिर भी थोड़ा-थोड़ा अभ्यास किया जाय तो धीरे-धीरे भी काया की ममता दूर कर सकते हैं ।

कायोत्सर्ग एक कष्टप्रद साधना है, अतः उससे काया की ममता अवश्य दूर होती है ।

1) कायोत्सर्ग खड़े-खड़े जिनमुद्रा में करना चाहिए ।

2) कायोत्सर्ग करते समय अपनी दृष्टि नासिका के अग्र भाग पर अथवा स्थापनाचार्यजी पर स्थिर करनी चाहिए ।

6) सामायिक में भावना : कहावत है-**'खाली दिमाग शैतान का घर ।'** मन को कभी खाली नहीं छोड़ना चाहिए । उसे कुछ-न-कुछ प्रवृत्ति में अवश्य जोड़े रखना चाहिए ।

प्रारंभ में जाप व ध्यान में साधक लंबे समय स्थिर नहीं रह सकता है, अतः सामायिक दरम्यान अपने मन को शुभ भावों से भावित करने के लिए अनित्य आदि बारह भावनाएँ तथा मैत्री आदि चार भावनाओं का चिंतन करना चाहिए । जैसे-

1) इस संसार में रहे हुए पदार्थ नाशवंत हैं । जन्म के साथ मृत्यु जुड़ी हुई है । जिसकी उत्पत्ति है, उसका विनाश है, अतः किसी पदार्थ के प्रति ममत्व रखने की आवश्यकता नहीं है ।

2) इस जगत में रहे पदार्थ स्वयं नाशवंत होने से वे अपनी आत्मा को शरण देने में समर्थ नहीं हैं ।

3) इस संसार की विचित्रता है कि यहाँ एक जन्म में जो माता होती है वही अगले जन्म में बहिन बन जाती है । मित्र शत्रु हो जाते हैं और शत्रु मित्र बन जाते हैं ।

4) इस संसार में आत्मा अकेली आती है और अकेली जाती है । मृत्यु के बाद कोई भी साथ में नहीं चलता है । आत्मा कर्म भी स्वयं बाँधती है और उन कर्मों की सजा भी स्वयं ही भुगतती है ।

5) आत्मा इस शरीर से भिन्न है । शरीर नाशवंत है, जब कि आत्मा अविनाशी है ।

6) यह शरीर अशुचि का घर है । अशुचि में से ही इस शरीर का निर्माण हुआ है । इस शरीर में उत्तम पदार्थ डाले जाँय तो भी यह शरीर उन सभी पदार्थों को बिगाड़ देता है ।

इस प्रकार सामायिक दरम्यान अनित्य आदि भावनाओं से अपनी आत्मा को भावित करना चाहिए ।

इसके साथ ही मैत्री, प्रमोद, करुणा और माध्यस्थ भावना से भी अपनी भावना को भावित करना चाहिए ।

7) सामायिक में अनानुपूर्वी : मन को केन्द्रित करने के लिए सामायिक दरम्यान अनानुपूर्वी पढ़ी जा सकती है । अनानुपूर्वी में नवकार के पाँच पद या नौ पद आते हैं ।

सामायिक काल दरम्यान सर्व सावद्य प्रवृत्तियों का त्याग किया जाता है ।

प्रश्न : सामायिक का काल 48 मिनिट क्यों है ?

उत्तर: छद्मस्थ आत्मा का मन एक विषय में अधिकतम 48 मिनिट तक स्थिर रह सकता है, अतः सामायिक का

काल 48 मिनिट है ।

प्रश्नः एक साथ कितनी सामायिक कर सकते हैं ?

उत्तर : सामायिक पारे बिना एक साथ तीन सामायिक कर सकते हैं । चौथी सामायिक लेनी हो तो सामायिक पारकर पुनः ले सकते हैं ।

सामायिक लेने की विधि

1. सर्व प्रथम शुद्ध वस्त्र पहनकर ।
2. बैठने की भूमि का चरवले से तीन बार अच्छी तरह से प्रमार्जन कर फिर कटासना बिछाए (कटासना झटके नहीं) ।
3. स्थापनाजी को स्थापना करने के लिये उँचे आसन या ठवणी पर धार्मिक पुस्तकादि रत्नत्रयी का उपकरण रखें ।
4. श्रावक/श्राविका कटासणा, मुहपत्ति, चरवला लेकर मुहपत्ति को बायें हाथ में मुख के सन्मुख रखकर एवं दायें हाथ को स्थापना मुद्रा से स्थापनाजी के सन्मुख रखकर नीचे लिखे अनुसार एक नवकार एवं पंचिंदिय सूत्र बोलें ।

नवकार सूत्र

।। नमो अरिहंताणं ।।
।। नमो सिद्धाणं ।।
।। नमो आयरियाणं ।।
।। नमो उवज्झायाणं ।।
।। नमो लोए सव्व-साहूणं ।।
।। एसो पंच-नमुक्कारो ।।
।। सव्व पाव-प्पणासणो ।।
।। मंगलाणं च सव्वेसिं ।।
।। पढमं हवई मंगलं ।।

पंचिंदिय सूत्र

पंचिंदिय-संवरणो, तह नव-विह-बंभचेर-गुत्तिधरो,
चउविह-कसाय-मुक्को, इअ अट्ठारस-गुणेहिं संजुत्तो ।।1।।

पंच महव्वय जुत्तो, पंचविहायार-पालण-समत्थो,
पंचसमिओ-तिगुत्तो, छत्तीस-गुणो गुरु मज्झ ।।2।।

(फिर खड़े होकर एक खमासमणा दे)

खमासमण (पंचांग प्रणिपात) सूत्र

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए मत्थएण वंदामि.

इरियावहियं-प्रतिक्रमण सूत्र

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्कमामि ?

इच्छं, इच्छामि पडिक्कमिउं. ।।1।।

इरियावहियाए विराहणाए. ।।2।।

गमणागमणे. ।।3।।

पाण-क्कमणे, बीय-क्कमणे, हरिय-क्कमणे, ओसा-उत्तिंग-पणग-दग-मट्टी-मक्कडा-संताणा-संकमणे. ।।4।।

जे मे जीवा विराहिया. ।।5।।

एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया.।।6।।

अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टीया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।।7।।

तस्स उत्तरीकरणेणं सूत्र

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्त-करणेणं,
विसोही-करणेणं, विसल्ली-करणेणं,
पावाणं कम्माणं, निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं.

अन्नत्थ सूत्र

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं,
जंभाइएणं, उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलीए,
पित्त-मुच्छाए ।।1।।

सुहुमेहिं अंग-संचालेहिं, सुहुमेहिं खेल-संचालेहिं,
सुहुमेहिं दिट्ठि-संचालेहिं ।।2।।

एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ,
हुज्ज मे काउस्सग्गो ।।3।।

जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ।।4।।

ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं,
अप्पाणं वोसिरामि ।।5।।

(अब एक लोगस्स ``चंदेसु निम्मलयरा'' तक या चार नवकार का काउस्सग्ग करके नीचे मुताबिक लोगस्स बोलें)

लोगस्स सूत्र

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे,
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ।।1।।

उसभ-मजिअं च वंदे, संभव-मभिणंदणं च सुमइं च
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ।।2।।

सुविहिं च पुप्फदंतं सीअल-सिज्जंस-वासुपूज्जं च,
विमल-मणंतं च जिणं, धम्मं संति च वंदामि ।।3।।

कुंथुं अरं च मल्लिं वंदे, मुणिसुव्वयं नमिजिणं च,
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ।।4।।

एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीण जरमरणा,
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ।।5।।

कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा,
आरुग्ग बोहिलाभं, समाहि-वर-मुत्तमं दिंतु ।।6।।

चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयास,
सागरवर-गंभीरा सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।7।।

(फिर एक खमासमण दें)
(फिर खड़े होकर बोलें)

6. इच्छाकारेण संदिसह भगवन् !

सामायिक मुहपत्ति पडिलेहुं ? इच्छं,

(ऐसा कहकर मुहपत्ति का पडिलेहन करे,

फिर खड़े होकर एक खमासमण दे)

(फिर खड़े होकर बोलें)

7. इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! **सामायिक संदिसाहुं ?** इच्छं,

(बोलकर एक खमासमणा दें)

(फिर खड़े होकर बोलें)

8. इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! **सामायिक ठाउं ?** इच्छं, (बोलकर थोड़े झुककर दोनों हाथ जोड़ कर खड़े-खड़े ही एक नवकार गिने)

(दो हाथ जोड़े हुए रखकर ही बोलें)

9. इच्छकारी भगवन् ! पसाय करी सामायिक दंडक उच्चरावोजी.

(गुरु महाराज या वडिल पुरुष हो उनसे,

न हो तो स्वयं **करेमि** भंते का पाठ उच्चारे)

करेमि भंते ! सामाइयं,

सावज्जं जोगं पच्चक्खामि,
जाव नियमं पज्जुवासामि,
दुविहं, तिविहेणं
मणेणं वायाए, काएणं न करेमि न कारवेमि,
तस्स भंते ! पडिक्कमामि, निंदामि गरिहामि
अप्पाणं वोसिरामि

(फिर एक खमासमण दे)

10. इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! **बेसणे संदिसाहुं ?**
इच्छं, इच्छामि खमा० (खड़े होकर बोलें)

11. इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! **बेसणे ठाउं ?** इच्छं,
इच्छामि खमा० (खड़े होकर बोलें)

12. इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! **सज्झाय संदिसाहुं ?**
इच्चं,
इच्छामि खमा० (खड़े होकर बोलें)

13. इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! **सज्झाय करुं ?**
इच्छं, (ऐसा कहकर बैठकर दोनों हाथ जोड कर मन में तीन नवकार गिने)

सामायिक लेने की विधि संपूर्ण

(फिर 48 मिनिट तक सूत्र कंठस्थ करे, स्तवन, थोय याद करें, धार्मिक वांचन करे या नवकारवाली गिने । सांसारिक बातें न करें)

सामायिक पारने की विधि

(सामायिक का समय 48 मिनिट पूरा हो जाये तब स्थापनाजी के सामने)

प्रथम खमासमण०-इरियावहियं०-

तस्स उत्तरीकरणेणं०-अन्नत्थ०-

(एक लोगस्स या चार नवकार का काउस्सग्ग करके नमो अरिहंताणं बोलकर)

लोगस्स०-

(फिर खमासमण दे)

इच्छामि खमा०

1. इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! **मुहपत्ति पडिलेहुं ?** इच्छं, (ऐसा कहकर मुहपत्ति का पडिलेहन करे, फिर

खड़े होकर) इच्छामि खमा० (फिर खड़े होकर बोलें)

2. इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! **सामायिक पारुं ?**

यथाशक्ति,

इच्छामि खमा० (फिर खड़े होकर बोलें)

3. इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! **सामायिक पार्यु ? तहत्ति,** (कहकर बैठकर नतमस्तक होकर दायाँ हाथ चरवले या कटासणा पर रखकर **नवकार** बोलकर **सामायिक** पारने का सूत्र बोलें)

सामायिक पारने का पाठ

समाइय-वयजुत्तो,
जाव मणे होई नियम-संजुत्तो,
छिन्नइ असुहं कम्मं,
सामाइअ जत्तिआ वारा ।।1।।

सामाइअम्मि उ कए
समणो इव सावओ हवइ जम्हा,
एएण कारणेणं बहुसो सामाइअं कुज्जा ।।2।।

सामायिक विधिए लीधुं, विधिए पार्युं, विधि करता जे कांई अविधि हुई होय, ते सवि हुं मन-वचन-कायाए करी मिच्छामि दुक्कडम् ।

दश मनना, दश वचनना, बार कायाना ए बत्रीस दोषमांही जे कोई दोष लाग्यो होय ते सवि हुं मन-वचन-कायाए करी मिच्छामि दुक्कडम् ।

(फिर स्थापनाजी को उत्थापन करने हेतु दायें हाथ को **उत्थापन मुद्रा** से स्थापनाजी के सन्मुख रखकर एक **नवकार** गिनें और पुस्तकादि को ले लें)

(सामायिक पारने की विधि संपूर्ण)

मुहपत्ति के 50 बोल

1. सूत्र, अर्थ, तत्त्व करी सद्दहुं,

2. सम्यक्त्व मोहनीय, 3. मिश्र मोहनीय,

4. मिथ्यात्व मोहनीय परिहरुं,

5. कामराग, 6. स्नेहराग,

7. दृष्टिराग परिहरुं, 8. सुदेव, 9. सुगुरु,

10. सुधर्म आदरु, 11. कुदेव, 12. कुगुरु,

13. कुधर्म परिहरुं, 14. ज्ञान, 15. दर्शन,

16. चारित्र आदरु, 17. ज्ञान विराधना,

18. दर्शन विराधना, 19. चारित्र विराधना परिहरुं,

20. मनगुप्ति, 21. वचन गुप्ति

22. काय गुप्ति आदरुं,

23. मनदंड, 24. वचनदंड

25. कायदंड परिहरुं,

26. हास्य, 27. रति, 28. अरति परिहरुं,

29. भय, 30. शोक, 31. दुगंछा परिहरुं,

32. कृष्णलेश्या, 33. नील लेश्या,

34. कापोत लेश्या परिहरुं,

35. रसगारव, 36. ऋद्धिगारव,

37. सातागारव परिहरुं,

38. मायाशल्य, 39. नियाणशल्य,

40. मिथ्यात्व शल्य परिहरुं, 41. क्रोध,

42. मान परिहरुं,

43. माया, 44. लोभ हरिहरुं, 45. पृथ्वीकाय,

46. अप्काय, 47. तेउकायनी जयणा करुं,

48. वायुकाय, 49. वनस्पतिकाय,

50. त्रसकायनी रक्षा करुं,

(बोल नं. 32-33-34 बहने न बोलें)

(बोल नं. 38-39-40-41-42-43-44 बहने न बोलें)

पडिलेहण करते समय साधु भगवंत और
श्रावक को 50 बोल
और श्राविकाओं को 40 बोल
मन में बोलना चाहिए ।

सामायिक की महत्ता

1) सामायिक धर्म मोक्ष मार्ग का प्रथम कदम है ।
2) सामायिक से सिद्धि और समाधि भाव की प्राप्ति होती है ।
3) पांच प्रकार के चारित्र में सामायिक प्रथम चारित्र है ।
4) सामायिक दरम्यान श्रावक भी साधु जैसा बनता है ।
5) सामायिक में हम छह काय जीव की हिंसा से बचते है ।
6) सामायिक से हमारी आत्मा अशुभ कर्मों का नाश करती है ।
7) ममता का त्याग और समता का स्वीकार सामायिक से ही होता है ।
8) उत्तम भाव से ही गई एक सामायिक भी हमारे सभी कर्मों का क्षय कर मोक्ष प्रदान करने में समर्थ है ।

श्रेणी 1	1	2							
श्रेणी 2	1	1	2						
श्रेणी 3	1	1	1	2					
श्रेणी 4	1	1	1	1	2				
श्रेणी 5	1	1	1	1	1	2			
श्रेणी 6	1	1	1	1	1	1	2		
श्रेणी 7	1	1	1	1	1	1	1	2	
श्रेणी 8	1	1	1	1	1	1	1	1	2
श्रेणी 9	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	2								
श्रेणी 10	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	2							
श्रेणी 11	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	2						
श्रेणी 12	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	2					

श्रेणी 13	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	2				
श्रेणी 14	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	2			
श्रेणी 15	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	2		
श्रेणी 16	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	2	
श्रेणी 17	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	2
श्रेणी 18	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	2								
श्रेणी 19	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	2							

श्रेणी 20	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	2						
श्रेणी 21	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	2					
श्रेणी 22	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	2				
श्रेणी 23	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	2			
श्रेणी 24	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	2		
श्रेणी 25	1	1	1	1	1	1	1	1	1

	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	2	
श्रेणी 26	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	2
श्रेणी 27	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	2								
श्रेणी 28	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	2							
श्रेणी 29	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1

	1	1	2						
श्रेणी 30	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	2					
श्रेणी 31	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	2				
श्रेणी 32	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	2			
श्रेणी 33	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1

	1	1	1	1	1	1	2		
श्रेणी 34	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	2	
श्रेणी 35	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	2
श्रेणी 36	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	2								
श्रेणी 37	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1

	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	2							
श्रेणी 38	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	2						
श्रेणी 39	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	2					
श्रेणी 40	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1

	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	2				
श्रेणी 41	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	2			
श्रेणी 42	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	2		
श्रेणी 43	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1

	1	1	1	1	1	1	1	2	
श्रेणी 44	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	2
श्रेणी 45	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	2								
श्रेणी 46	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1

	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	2							
श्रेणी 47	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	2						
श्रेणी 48	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	2					
श्रेणी 49	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1

	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	2				
श्रेणी 50	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	2			
श्रेणी 51	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	2		

श्रेणी 52	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	2	
श्रेणी 53	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	2
श्रेणी 54	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1

	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	2								
श्रेणी 55	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	2							
श्रेणी 56	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1

	1	1	2						
श्रेणी 57	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	2					
श्रेणी 58	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	2				
श्रेणी 59	1	1	1	1	1	1	1	1	1

	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	2			
श्रेणी 60	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	2		
श्रेणी 61	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1

	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	2	
श्रेणी 62	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	2
श्रेणी 63	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1

	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	2								
श्रेणी 64	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	2							
श्रेणी 65	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1

	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	2						
श्रेणी 66	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	2					
श्रेणी 67	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1

	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	2				
श्रेणी 68	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	2			
श्रेणी 69	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1

	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	2		
श्रेणी 70	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	2	
श्रेणी 71	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1

	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	2
श्रेणी 72	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	2								
श्रेणी 73	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1

	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	2							
श्रेणी 74	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	2						
श्रेणी 75	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1

	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	2					
श्रेणी 76	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	2				

श्रेणी 77	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	2			
श्रेणी 78	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1

	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	2		
श्रेणी 79	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	2	
श्रेणी 80	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1

	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	2
श्रेणी 81	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	2								
श्रेणी 82	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1

	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	2							
श्रेणी 83	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1

	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	2						
श्रेणी 84	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	2					
श्रेणी 85	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1

	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	2				
श्रेणी 86	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	2			

श्रेणी 87	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	2		
श्रेणी 88	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1

	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	2	
श्रेणी 89	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	2
श्रेणी 90	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1

	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	2								
श्रेणी 91	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1

	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	2							
श्रेणी 92	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	2						
श्रेणी 93	1	1	1	1	1	1	1	1	1

	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	2					
श्रेणी 94	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1

	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	2				
श्रेणी 95	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	2			

श्रेणी 96	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	2		
श्रेणी 97	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1

	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	2	
श्रेणी 98	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1

	1	1	1	1	1	1	1	1	2
श्रेणी 99	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	2								
श्रेणी 100	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1

	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	1	1	1	1	1	1	1	1
	1	2							

प्रकाशन-सहयोगी

शा. शांतिलालजी

श्रीमती लीलाबाई

पूज्य पिताजी **शा. शांतिलालजी प्रतापचंदजी**
बागरेचा चौहान के
जीवन के **75वें** वर्ष में प्रवेश निमित्त

फर्म :

महावीर क्लॉथ सेंटर
बोरली पंचतन,
ता. श्रीवर्धन
जिला. रायगढ (M.S.)
मो. **9421253903**

निवेदक :

पुत्र : देवीचंद
पुत्रवधु : कंचनबेन
प्रपौत्र : पर्व
प्रपौत्री : हीना
आदि बागरेचा परिवार
(बिसलपुर राज.निवासी)